‘मानव कल्याण के लिए धर्म’विचार कुंभ का समापन

मानव कल्याण के लिए धर्म पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आज इंदौर में सफलतापूर्ण समापन हो गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सम्मेलन में पधारे श्री श्री रविशंकर, तिब्बत से आए लोबसांग सांगे और समस्त विद्वानों का स्वागत करते हुए ऐलान किया कि दुनिया में कई विद्वानों के पास समाधानकारक सोच है और सभी की सोच को जोड़कर एक समाधान निकले ऐसा प्रयास करना होगा। उन्होने सम्मेलन से निकले बिंदुओं को प्रकाशित कर दुनियाभर में प्रचारित करने का भी ऐलान किया। उन्होने कहा कि धर्म के नाम पर ईष्या, द्वेष, वैमनस्य अधार्मिकता है। उन्होने कहा कि इस सम्मेलन से निकले विचारों का अमृत कुंभ सिंहस्थ घोषणा के रुप में 12,13,14 मई को होने वाली कान्फ्रेंस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जारी करेंगे। शिवराज सिंह जी ने कहा कि मेरी जनता ही मेरी पूजा है और अगर मैने उसकी सेवा कर ली तो मेरी पूजा भी पूरी हो जाएगी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मन, बुद्धि और शरीर की स्वस्थता के लिए सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंटीग्रेटेड हीलिंग (समन्वित चिकित्सा) सेंटर शुरु करने का भी ऐलान किया। सीएम ने सर्व धर्म समभाव के साथ सभी धर्मों की अच्छी बातों को मिलाकर मानवीय गुणों से भरी हुई शिक्षा पद्धति तैयार करने के लिए वैकल्पिक शिक्षा केंद्र (सेंटर फॉर अल्टरनेटिव एजुकेशन) शुरु करने का भी ऐलान किया। मुख्यमंत्री ने सांची विश्वविद्यालय की ज़मीन से लगी अतिरिक्त 20 एकड़ ज़मीन पर अलग-अलग देशों की पीठ (सेंटर) खोलने वाले देशों को ज़मीन देने का भी ऐलान किया।

मानव कल्याण के लिए धर्म पर अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद के तीसरे दिन समापन सत्र के प्रमुख वक्ता श्री श्री रविशंकरजी ने कहा कि भारत में व्यक्तिगत कल्याण और समाज कल्याण को अलग-अलग कभी माना ही नहीं। उन्होने कहा कि धर्म का पोषण नहीं होने से समाज में विकृतियां आई। धर्म को निरपेक्ष करने, राजनीति और नेताओं में करुणा और बिजनेस की सामाजिक जिम्मेदारी तय होने से मानव कल्याण होगा। उन्होने कहा कि धर्म के प्रति विश्वास आ जाए तो आत्महत्या नहीं होगी क्योंकि धर्म बुद्धि, चेतना को रोशन करता है। तिब्बत के सैग्यांग श्री लोबसांग सांगे ने कहा कि धर्म संप्रदाय में बदलने से मुश्किल होती है। उन्होने कहा कि अच्छे गुरु और नेता ही धार्मिक सहिष्णुता और कल्याण को बढ़ावा देंगे। समापन सत्र में प्रमुख सचिव संस्कृति श्री मनोज श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तीसरे दिन पहले मुख्य सत्र के प्रथम वक्ता इज़राइल से आए रब्बी के प्रवक्ता श्री ऑडड वाइनर ने कहा कि हम सभी में सबके कल्याण की भावना निहित है और इसे समझकर अपनाना आवश्यक है। संवादहीनता की वजह से ही संपूर्ण विश्व में अराजकता उत्पन्न हो रही है और युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। सिंगापुर से आए श्री सुमना सिरी ने कहा कि धर्म के माध्यम से ही हम धरती को स्वर्ग जैसा सुंदर बना सकते हैं। उन्होने कहा कि डिजिटल डिस्टर्बेंस के युग में आध्यात्म और धर्म ही मनुष्य कल्याण के साधन बन सकते हैं। अमेरिका से आए प्रोफेसर वामसी जुलूरी ने मीडिया, धर्म और उसके मनोविज्ञान पर बात की। वियतमान से आए टिच नाट टू ने कहा कि समाज का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास किए बिना बात नहीं बनेगी। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो नरेश मान वजाचार्य ने मानवता के विश्वव्यापी मूल्यों को समझने में धर्म काफी मददगार साबित हो सकता है।

दूसरे मुख्य सत्र में अध्यक्षता प्रो कुसुम जैन ने की। सत्र के वक्ता जापान के प्रो याशो कमाटा, चीन से आए प्रो हयान शेन और प्रो यज्ञनेश्वर शास्त्री थे। सत्र में प्रो शास्त्री ने कहा कि संप्रदाय से धर्म का वास्तविक अर्थ प्रतिपादित नहीं होता इसलिए धर्म को उसके व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखकर ही मानव कल्याण संभव है।

सम्मेलन में सभी श्रेणियों में कुल करीब **1221 रजिस्ट्रेशन** हुए। इनमें 550 ऑनलाइन व 300 ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन किए गए। सम्मेलन में राज्य के सभी जिलों से करीब 120 धर्म विद्वान और धर्मगुरु भी बुलाए गए थे। सम्मेलन में दुनियाभर से करीब 280 प्रतिभागी और विद्वान शामिल हुए और 10 सत्रों की अध्यक्षता विदेशी विद्वानों ने की। सम्मेलन के दौरान 10 विषयों पर समानांतर सत्रों में करीब 150 शोध पत्र पेश किए गए।